INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 4, April 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

वृद्धावस्था और समाज में उनकी स्थिति का अध्ययन :–

Dr. Jyoti Baya

सारांश :– वृद्धावस्था जीवन का वह अंतिम पड़ाव होता है जिससे प्रत्येक मनुष्य को गुजरना पड़ता है। जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक मनुष्य को हर उस कटौती का सामना करना पड़ता है जो उसके जीवन से संबंधित हो। लेकिन वृद्धावस्था तक आते–आते व्यक्तियो को ऐसे अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता हैं जिससे परिवार व समाज दोनों ही प्रभावित हो जाते है। वृद्धावस्था के दौरान उनकी शारिरिक व मानसिक समस्याएँ उत्पन्न होने लगती है जिससे सरकार पर यह दबाव आ जाता है कि उनके स्वास्थ से जुड़ी वे सारी जिम्मेदारी को पुरा करे इसके लिए पेंशन, स्वास्थ सुविधाएं, मनोरंजन के साधन एवं वृद्धावस्था जैसे संस्था आदि संचालित करती है। इससे सरकार पर आर्थिक बोझ बढ़ता है। इसके साथ–साथ समाज व परिवार भी इस अवस्था से अछुते नहीं है क्योकि किसी भी व्यक्ति की यदि स्थिति खराब हो चाहे स्वास्थ से संबंधित हों या मानसिक रूप से दोनों ही स्थितियों में परिवार के लोग सफर करते है इससे घर का माहौल खराब हो जाता है आर्थिक दबाव बढ़ने लगती है। जिसके कारण व्यक्ति परेशान हो कर वृद्धजनों को संस्था में छोड़ना ठीक समझते है क्योकि वे उनके कारण हो रही परेशानियों को नही बर्दास्त कर सकते है अंत में उन्हें एक आश्रम का सहारा लेना पड़ता है।

शब्दकुंजी :– वृद्धावस्था, स्वास्थ, समस्याएँ, शारिरिक, मानसिक, अन्य ।

प्रस्तावना :– आजकल की बदलती दुनिया में सबसे बड़ी वृद्धजनों पर देखने को मिल रही है कि कैसे एक बेटा अपने ही माता–पिता को बोझ समझकर वृद्धाआश्रम जैसी संस्थाओं में छोड़ देते है। यह कहकर की हम इनका लालन–पालन नहीं कर सकते हैं। उनकी परेशानियों से छुटकारा पाने के लिए वे अपनी जिम्मेदारियों से मुँह मोड़ लेते है। जबकि यही वृद्धा अपने बच्चो की हर आवश्यकताओं को पूरी करते–करते वृद्धावस्था जैसी स्थिति में आ जाते है पर भी अपने बच्चों के लिए करना नहीं छोड़ते और बच्चे जहाँ कुछ परेशानी आई सीधे उन्हें कहीं और छोड़ने का सोच लेते है कभी अपने रिश्तेदारों के यहाँ तो कभी उनकी बेटियों के यहाँ। लेकिन स्वयं उन्हें रखकर उनकी सेवा नहीं करना चाहता है। इसी के विपरीत यदि देखा जाये तो जिन वृद्धों को पेंशन मिलता है उनकों सिर्फ पैसे के कारण उनको अपने घरों पर रखा जाता है उनकी देखभाल की जाती है क्योकि उनके पास पैसा का आवक है। जैसे ही पैसा आना बंद हुआ बच्चों के मन में मनमोटाव शुरू हो जाता है। उनकी बातें कड़वी लगने लगती है। उनका बोलना गलत समझते है यह सारी परेशानी एक वृद्धजन को सहना पड़ता है। समाज की यदि बात करे तो समाज के लोग भी वृद्धों के साथ अभद्र व्यवहार करते है उनको लगता है उनकी उम्र हो गई है वो समाज के लिए क्या कर सकते है और उनकी बातों को नाकार दिया जाता है जिससे समाज में उठना बैठना भी कम हो जाता है क्योंकि उन्हें कही लाने ले जाने के लिए अन्य लोगों का सहारा चाहिए होता है जिससे लोग चिड़चिड़ाकर उनके साथ गलत व्यवहार करने लग जाते है। वृद्धावस्था ही एक ऐसा चक्र हैं जो जीवन काल में सभी व्यक्तियों को इससे गुजरना पड़ेगा। समाज, परिवार ये भूल जाते है कि जो व्यवहार आप दूसरों के साथ कर रहे है वहीं आपके साथ भविष्य में होगा। लेकिन व्यक्ति भविष्य को छोड़कर वर्तमान मे जीना ज्यादा पंसद करते है

वृद्धावस्था और समाज :–

वैदिक काल में वृद्धाजनों को पुजा जाता था उनका मान सम्मान किया जाता था उनके आज्ञा के बिना कार्य नही किया जाता था तथा उन्हीं का निर्णय सर्वोपरि माना जाता था क्योकि पूर्व काल में संयुक्त परिवार होता था आपस में सब मिलजूल कर कार्य करते थे तथा एक–दूसरे की सहायता करते थे। सीमित जनसंख्या व सीमित साधन के कारण लोगो की आवश्यकताएं भी सीमित थी उन्हें इतनी समस्याओं का सामना नही करना पड़ता था। जितना आज के समय में करना पड़ता हैं जो भी समस्याएं होती थी उन्हें घर के सदस्य मिलकर कर लेते थे तथा बड़े बुजुर्गों की भी देखभाल करते थे इस कारण

उतनी परेशानियाँ नहीं होती थी लेकिन आज के आधुनिक युग मे जहाँ चीजों को लेकर इतना मारा–मारी चल रही है। ऐसे में और परेशानियों को झेलना नहीं कर पा रहे है तथा आर्थिक दबाव कहीं न कहीं अपने जिम्मेदारियों से मुंह मोड़वा रही है समाज में वही लोगों को पूछा जाता है जो शारिरिक व मानसिक दृष्टिकोण से स्वस्थ हो तथा जिनका समाज में वर्चस्व हो। समाज में ऐसे व्यक्तियों को सम्मान निलता हो जो कार्य कर सके। लेकिन जैसे ही वह व्यक्ति वृद्धावस्था में पहुँचता है और वे शारिरिक रूप से समाज के लिए कार्य नहीं करता तो लोग उससे दूरी बनाना शुरू करते है उसे समाज से जुड़े किसी कार्यों में न पूछना तथा सामाजिक कार्यक्रमों में उतना मान सम्मान न देना। ये सारी बाते सामने आने लगती हैं और वृद्धजन इन व्यवहारों को देखकर समाज से कटा–कटा रहने लगता है। तथा एक समय ऐसा आ जाता हैं कि समाज पूरी तरह दूरी बना लेता है। समाज मे यदि किसी व्यत्ति को रहना है तो उस समाज में उसकी एक निश्चित भागीदारी होनी चाहिए चूंकि वृद्धजनों को दूसरो के सहारे जीना व चलना पड़ता है ऐसे में समाज के लिए बोझ बन जाते है समाज को लगने लगता है कि हम समाज के लिए कुछ करें या वृद्धजनों के लिए। इस कारण से वृद्धावस्था की समाज में स्थिति खराब होती जा रही है।

सरकार द्वारा वृद्धों के लिए प्रमुख योजनाएँ :–

1. **आयुष्मान भारत :–** वृद्धावस्था जैसे स्थिति को ध्यान में रखते हुए सरकार द्वारा इस योजना को लाई गई जिसमें 70 वर्ष या उससे अधिक आयु के वरिष्ट नागरिकों को 5 लाख तक की मुक्त में स्वास्थ संबंधित बीमा योजना देना है जिससे उम्र के पढ़ाव में आकर यदि उन्हे किसी भी प्रकार से स्वास्थ संबंधित परेशानियों का समान करना पड़े तो उन्हे मुक्त में ईलाज मिल सकें।
2. **प्रधानमंत्री श्रमयोगी मान–धन योजना :–** 60 वर्ष की आयु होने जाने पर श्रमिक जो असंगठित क्षेत्रों में कार्य करते है उनके लिए 3000 की मासिक पेंशन योजना है ताकि उन्हे सहायता मिल सके।
3. **अन्नपूर्णा योजना :–** गरीबी रेखा से जीवन यापन करने वाले वृद्धों की जिसका कोई सहारा नहीं है उन्हें 10 किलोग्राम निः शुल्क खाद्य सामग्री दी जा रही है। ताकि उन्हें भोजन संबंधित समस्याओं का सामना न करना पड़े।
4. **इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना :–** बीपीएल श्रेणी के कार्डधारक वृद्ध जिसकी उम्र 60–79 वर्ष हो चुकी है उन्हें राज्य सरकार 200 रु. व केन्द्र सरकार 300 रु. प्रतिमाह पेंशन देती है तथा 80 वर्ष से अधिक आयु के वृद्धजनों को 500 रु. प्रतिमाह केन्द्र सरकार द्वारा पेंशन दिया जाता है।

सामाजिक चुनौतियाँ :–

1. **अकेलापन :–** सयुक्त परिवार हो चाहे एकल परिवार हो जब भी किसी व्यक्ति से आपका व्यवहार उनके अनुरूप नहीं होता तो उन्हें बुरा लगने लगता है। जब तब साथ में रह रहे होते हैं तो वृद्धजन खुश होते है सभी को साथ देखकर। लेकिन यही संयुक्त परिवार धीर–धीरे बिखरने लगते है लोग अपनी जरूरतों के लिए अलग–अलग जगहों पर जाते है जिससे घर पर रह रहे वृद्धजनों को अकेला महसूस होता है। घर पर अनेकों लोग होने के बावजूद यदि उनसे कोई ठीक से बात नहीं करता व उनकी बातों को नही सुनता तो भी वे जीवन में अकेला महसूस करते है।

2. **जीवन साथी की कमी :–** मनुष्य एक सामजिक प्राणी है उन्हें समाज में रहना और जीवन यापन करना है उसे जीवन साथी की जरूरत पड़ती हैं। जो उसके साथ–साथ हर कामों या हर समय साथ रहती है। लेकिन जब एक की मृत्यु हो जाये तो वे जीवन में अकेला महसूस करते हैं क्योकि बच्चे एक समय सीमा तक ही उनके साथ बात व उन्हें पूछ सकते है वहीं जीवन साथी हर समय उनके साथ रहती है ऐसे में एक की कमी सम्पूर्ण जीवन को विरान कर देती है।

3. **पारिवारिक ढ़ाचे में बदलाव :–** जब परिवार संयुक्त रूप से मिलजूल कर रहता हैं तो एक डोर से बंधा रहता है लेकिन वही परिवार बिखरने लगता है तो सम्पूर्ण व्यक्तियों के जीवन में परिवर्तन लाता है।

निवारण :–

सामाजिक प्राणी होने के नाते जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक हर व्यक्ति को एक जैसा मान–सम्मान मिलना चाहिए। उन्हें उनके बढ़ते उम्र के हिसाब से व्यवहार नहीं करना चाहिए। क्योकि हर एक व्यक्ति उसी दौर से गुजरेगा इसलिए यह ध्यान रखना चाहिए कि आज आप जो गलत व्यवहार दूसरो के साथ कर रहे हो वह पलट कर अपने ऊपर भी आयेगा। समाज तथा परिवार के सहयोग से ही वृद्धावस्था के दौरान आने वाली मुश्किलों का सामना किया जा सकता है। ऐसे में उनकों अकेला छोड़ना समाज के लिए भी अच्छा नहीं है। सामाजिक स्तर पर यह कोशिश करनी चाहिए कि बड़े बुजुर्गों को वो मान–सम्मान मिले जिसके वे हकदार है और साथ ही सरकार को भी उनके लिए नई–नई योजनाएँ लानी चाहिए जिससे उनका जीवन सरल और सार्थक हो।

Copyright & License:
© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.